

- अप्रकेतं (3. अ + प्र०) adj. *unterschiedlos, unerkennbar: अप्रकेतं संलिलं सर्वमा इदम्* RV. 10, 129, 3.
- अंप्रति (3. अ + प्र०) adj. *ungemindert, wohlverhalten: वसु* RV. 1, 33, 8.
- अप्रगुण (3. अ + प्र०) adj. *verwirrt* AK. 3, 2, 21.
- अंप्रचङ्कश (3. अ + प्र०) adj. *ohne Sehkraft: पर्यस्तात्ता अप्रचङ्कशा अ-  
 ल्लिपाः संतु पाण्डाः* AV. 8, 6, 16.
- अंप्रचेतस् (3. अ + प्र०) adj. *unverständlich, thöricht: कथा विधात्यप्रचे-  
 ताः* RV. 1, 120, 1.
- अप्रचेक्ष्य (3. अ + प्र०) *nicht zu ergründen (?)*, ein Bein. *Çiva's Çiv.*
- अंप्रच्युत (3. अ + प्र०) adj. 1) *unerschüttert* RV. 2, 28, 8. — 2) *nicht  
 abweichend von Etwas, treu anhängend, befolgend*, mit dem abl.: *एत-  
 द्वा ऽभिक्लितं सर्वं निःश्रेयसकरं परम्। अस्मादप्रच्युतो विप्रः प्राप्नोति परमां  
 गतिम् ॥* M. 12, 116.
1. अप्रज (3. अ + प्रज) adj. f. *आ nicht gebährend, das Kind im Mut-  
 terleibe zurückhaltend: संवत्सरद्वयं तं तु गान्धारी गर्भमाकृतम्। अप्रजा  
 धार्यामास* MBh. 1, 4491.
2. अप्रज (von 3. अ + प्रजा) adj. f. *आ ohne Nachkommenschaft, kin-  
 derlos: अप्रजाः सत्त्वत्रिणाः* RV. 1, 21, 5. M. 9, 196. 197. N. 1, 5. R. 1, 37, 23.  
*मैथुनमप्रजम्* Kān. 37. — Vgl. *अप्रजस्*.
1. अप्रजसि (3. अ + प्र० von ज्ञा) adj. *unerfahren, ungeschickt: त एते  
 सिरीस्तलं तन्वते अप्रजसयः* RV. 10, 71, 9.
2. अप्रजसि (3. अ + प्र० von जन्) adj. *nicht zeugungskräftig: रेतः* Çat.  
 Br. 2, 3, 4, 14.
1. अप्रजस् (3. अ + प्र०) adj. *ohne Nachkommenschaft, kinderlos: अ-  
 स्वैर्वाप्रजसं कृषोमि* AV. 7, 33, 3. 12, 3, 5, 7.
2. अप्रजस् (wie eben) adj. *dass.* P. 5, 4, 122. Vop. 6, 26. Çat. Br. 1, 6, 4,  
 17. R. 1, 14, 29. 39, 2. 43, 12.
- अप्रजस्ता (von अप्रजस्) f. *Kinderlosigkeit* AV. 9, 2, 3.
- अप्रजास्त्वं (von अप्रजस्, nom. von अप्रजस्) n. *dass.* AV. 8, 6, 26. 10,  
 1, 17.
- अप्रजा (loc. von अप्रति) adv. *ohne Entgelt: न सोमो अप्रजा पये* RV. 8,  
 32, 16.
- अप्रति (3. अ + प्रति) adj. *unwiderstehlich: य एक इदंप्रतिर्मन्यमान  
 अदस्मादन्यो अत्रनिष्ट तव्यान्* RV. 5, 32, 3. 2, 19, 4. यद्धं वृत्रा भूरीपयेको  
 अप्रतीनि कृत्ति 4, 17, 19. Davon अप्रति adv.: *कृत्यो अप्रत्यसुरस्य वीरान्*  
 RV. 7, 99, 5. 23, 3. 83, 4. 1, 53, 6. 9, 23, 7. AV. 7, 50, 1. — Vgl. *अप्रता*.
- अप्रतिकर (3. अ + प्र०) adj. *vertrauend oder des Vertrauens würdig  
 (विश्वस्त, विश्वासपात्र) GĀṬĪDH. im ÇKDR.*
- अप्रतिकर्मन् (3. अ + प्र०) adj. *ohne Gegenthat, dessen Thaten unver-  
 gleichlich sind* R. 1, 78, 22; vgl. *अप्रतिकर्मन्* 76, 18. 5, 20, 17. 6, 65, 35.
- अप्रतिगृह्य (3. अ + प्र०) adj. *von dem man nichts annehmen darf*  
 Çat. Br. 14, 6, 10, 3. (= BṚH. ÂR. Up. 4, 1, 3.) KĪTJ. ÇR. 25, 8, 16.
- अंप्रतिग्राहक (3. अ + प्र०) adj. *der nichts annimmt: ओत्रियाः* Çat.  
 Br. 13, 4, 3, 14. ÂÇV. ÇR. 10, 7.
- अंप्रतिग्राह्य (3. अ + प्र०) adj. *was nicht angenommen werden darf:*  
*अप्रतिग्राह्यप्रतिग्राह्यम्* M. 11, 253.
- अंप्रतिघ (3. अ + प्र०) adj. *nicht zurückzuschlagen, nicht zu besiegen:*  
*रजः* M. 12, 28.

अंप्रतिद्वय (3. अ + प्र०) adj. *ohne Gegenmann im Kampfe, unbesieg-  
 lich: तामप्रतिमकर्माणामप्रतिद्वन्द्वमाकृवे* R. 1, 76, 18. पौरुषे चाप्रतिद्वन्द्वः  
 (रामः) 6, 70, 37. प्रणु मे सुमरुद्वीर्यमप्रतिद्वन्द्वमाकृवे 5, 22, 19. सो ऽहं वन-  
 मिदं प्राप्ता निर्जनं लक्षणास्वितः। सीतया चाप्रतिद्वन्द्वः (auch ohne Wider-  
 spruch von Seiten der Sittā) सत्यवादे स्थितः पितुः 2, 107, 8. Oder ist etwa  
 अप्रतिद्वन्द्व (voc.) zu lesen? GORR. 113, 8: सो ऽहं वनमिदं दुर्गं निर्जनं ल-  
 क्षणास्वितः। ससीतयागता वीर सत्यवाक्ये स्थि०.

अंप्रतिधुर (3. अ + प्र०) adj. (ein Ross,) *das keinen (würdigen) Deich-  
 selgenossen findet* Çat. Br. 13, 4, 2, 1. 2.

अंप्रतिधृष्टशवस् (3. अ + प्रतिधृष्ट - शवस्) adj. *dessen Wucht man  
 sich nicht entgegenstellen kann, von Indra* RV. 1, 84, 2.

अंप्रतिधृष्य (3. अ + प्र०) adj. *dem man nicht trotzen kann: वार्तः* VS.  
 38, 7.

अंप्रतिपद् (3. अ + प्र०) adj. *nicht einhaltend, unzuverlässig* VS. 30, 8.  
 MAHĪDH. = विकल.

अंप्रतिवल (3. अ + प्र०) adj. *gegen den keine Kraft aufkommt, von  
 unvergleichlicher Kraft* R. 6, 70, 35.

अंप्रतिबुवन् (3. अ + प्र० von ब्रू mit प्रति) adj. *nicht widerredend: स-  
 ज्ञातिरेद्धा ऽंप्रतिबुवद्भिः* AV. 3, 8, 3.

अंप्रतिभ (von 3. अ + प्रतिभा) adj. *schüchtern, bescheiden* AK. 3, 4, 98.  
 अप्रतिभा (3. अ + प्र०) f. *das Nichtwagen einer Handlung, Scheu da-  
 vor: प्रजापतेरगुणाध्यानम् — अप्रतिभाया वा तद्वादः* KĪTJ. ÇR. 12, 4, 23.

अंप्रतिम (von 3. अ + प्रतिमा) adj. f. *आ ohne Gleichen, unvergleich-  
 lich: अप्रतिमकर्मन्* R. 1, 76, 18. 5, 20, 17. 6, 65, 35. इषेणाप्रतिमेन N. 16,  
 7. PĀNĀT. III, 240. गतिनाप्रतिमेन VĪÇV. 14, 10. लोकेश्वरप्रतिमो भुवि N.  
 1, 14. चकाराप्रतिमं लोके तपः परमदुष्करम् VĪÇV. 15, 2. नरेष्वप्रतिमो  
 ऽर्जुनः HĪP. 1, 37. इषेणाप्रतिमा भुवि R. 1, 34, 14. 36, 13. 3, 38, 17. VĪÇV.  
 13, 5. HĪP. 2, 18. SĪV. 2, 18. N. 10, 25. अप्रतिमो गुणैः R. 4, 28, 18. त्रिषु  
 लोकेषु नारीणां इषेणाप्रतिमाभवत् SUND. 3, 15. अनेकशास्त्रेष्वप्रतिमबुद्धिम्  
 PĀNĀT. 196, 17.

अंप्रतिमन्यमान (3. अ + प्र०) adj. *unfähig den Eifer, den Zorn gegen  
 einen Andern geltend zu machen: अर्धरे पयत्तामप्रतिमन्यमानाः* AV.  
 13, 1, 31.

अंप्रतिरथ (3. अ + प्र०) 1) adj. *ohne Gegenmann im Kampfe: स यः स  
 इन्द्रः। एष सो ऽप्रतिरथः* Çat. Br. 9, 2, 3, 5. ÇĀK. 192. ÇĀK. Ch. 89, 3. —  
 2) m. a) *Kämpfer* TRĪK. 3, 3, 195. BHĀRĪP. im ÇKDR. — b) N. pr. ein Sohn  
 Indra's, angeblicher Rshi von RV. 10, 103. RV. ANUKR. ein Sohn Ran-  
 tināra's VP. 448. — 3) n. *die von Apratiratha verfasste Hymne:*  
*ब्रह्मन्प्रतिरथं जपेति* Çat. Br. 9, 2, 3, 1. 5. KĪTJ. ÇR. 18, 3, 17. 11, 1, 9. ÂÇV.  
 ÇR. 4, 8. GRHJ. 3, 12. यद्यात्रामङ्गलं साम तदप्रतिरथे विदुः HĪR. 121. प्रति-  
 रथं यात्रामङ्गलसामि च ein Gesang, der bei einem Feldzuge für glückbrin-  
 gend angesehen wird, TRĪK. 3, 3, 195. Daraus haben BHĀRĪP. im ÇKDR.  
 und WILSON drei Bedeutungen gemacht: a) *यात्रा Marsch*, b) *मङ्गल  
 glückbringend*, c) *सामन् Sāmaveda*.

अंप्रतिरूप (3. अ + प्र०) adj. f. *आ. 1) nicht entsprechend, unangemes-  
 sen* Çat. Br. 14, 4, 1, 2. fgg. (= BṚH. ÂR. Up. 1, 3, 2. fgg.) 5, 1, 8. (= 2, 1, 8.)  
 — 2) *ohne Gegenbild, unvergleichlich*, im guten und im bösen Sinne:  
*रुद्रायाप्रतिरूपाया* R. 1, 36, 20. तस्यास्त्वप्रतिरूपायाः 3, 38, 20. 6, 74, 12. व-